इकाई : 4

जीवन रक्षक आकस्मिक प्रबंधन

आपदा प्रबंधन को दो चरणों में लागू करने की जरूरत है। ये हैं (i) आकस्मिक प्रबंधन और (ii) दीर्घकालीन प्रबंधन। आपदा की घड़ी में यह जीवनरक्षक प्रबंधन है जबकि दीर्घकालीन प्रबंधन का उद्देश्य संभावित आपदा के प्रभाव को कम करना है। आकस्मिक प्रबंधन ही किसी प्रशासन की सफलता की कसौटी होती है। इसके अन्तर्गत आपदा के आते ही प्रभावित लोगों को आपदा से निजात दिलाना ही प्रमुख उद्देश्य होता है। अलग-अलग प्रकार के प्राकृतिक आपदाओं के आकस्मिक प्रबंधन में अलग-अलग प्रकार की प्राथमिकतायें होती हैं।

(1) बाढ़ की स्थिति में आकस्मिक प्रबंधन :

बाढ़ के आते ही जान-माल और मवेशी पर भारी संकट आ जाता है। अत: पहली प्राथमिकता बाढ़ रोकना नहीं बल्कि बाढ़ से लोगों को बचाना है। उसी प्रबंधन की तारीफ होती है जो लोगों को नाव पर बैठाकर या तैरने वाले व्यक्ति द्वारा रबर के गुब्बारे के साथ दूसरे को भी खींचते हुए सुरक्षित जगह पर ले जाय। उसके बाद मवेशियों को तथा घर के सामानों को बाहर निकालने की प्राथमिकता होती है । यह सुरक्षित स्थान गाँव के बाहर तटबंध की ऊँची भूमि, गाँव के छत वाले उँचे मकान या कोई भी सार्वजनिक निर्मित बाढ़ मुक्त क्षेत्र हो सकता है।

सुरक्षित स्थान पर पहुँचाने के बाद भोजन और पेयजल की व्यवस्था आवश्यक है। बच्चों के लिए दूध की व्यवस्था, महामारी से बचने के लिए गर्म जल, गर्म भोजन तथा छोटे से जगह में मिलजुलकर रहने के लिए वातावरण बनाना आकस्मिक प्रबंधन का ही हिस्सा है। पशुओं के लिए चारे की व्यवस्था भी उतनी ही आवश्यक होती है। पुन: बाढ़ के कारण साँप और बिच्छू जैसे जहरीले जीव भी ऊँचे खुले जगह पर आ जाते हैं। यदि बाढ़ का पानी कई

दिनों तक जल जमाव की स्थिति में हो तो महामारी की भी संभावना होती है।

वही आकस्मिक प्रबंधन सफल होता है जो ऊपर वर्णित समस्याओं से निपटने का प्रबंधन आपदा आने के पूर्व ही कर लेता है। जैसे –खाद्य पदार्थ, पशु चारा, महामारी से संबंधित जीवनरक्षक दवाई, छिड़काव की सामग्री इत्यादि का पूर्व प्रबंधन आकस्मिक प्रबंध को सफल बनाता है।

(2) भूकंप एवं सुनामी की स्थिति में आकस्मिक प्रबंधन :

भूकंप की स्थिति में आकस्मिक प्रबंधन का तीन प्रमुख कार्य होता है। (क) बचे हुए विस्थापित लोगों को राहत कैंप में ले जाना या उसे सभी प्रकार की आवश्यक सुविधायें उपलब्ध कराना (ख) वैसे लोगों को मलबे से निकालना जो अभी भी दबे हुए हैं। (ग) अकाल मृत्युप्राप्त आम लोगों को और जानवरों को सही स्थानों पर दफनाकर या धार्मिक रीतियों के अनुरूप अंतिम संस्कार करना। ऐसा न करने से महामारी फैलने की संभावना रहती है।

क्या आप जानते हैं :

सुनामी की स्थिति में तट पर रहने वाले लोगों के लिए सुनामी से भीषण आपदा आती है। कई मीटर ऊपर उठे जलीय प्रहार से तटीय लोगों के मरने, समुद्री जल में समा जाने या जल के प्रहार से घायल होने की संभावना रहती है। अतः पहली प्राथमिकता है कि घायल का प्राथमिक उपचार कर अस्पताल पहुँचाया जाय तथा लापता की पता लगाने के लिए हेलिकोप्टर और रडार जैसे यंत्रों की मदद ली जाय। शक्तिचालित समुद्री नौकायें भी सुनामी के बाद इस कार्य में लगायी जानी चाहिए। पुनः मृत लोगों की पहचान और संबंधित परिवारों को न सिर्फ सांत्वना वरन सभी प्रकार की आवश्यक सहायता के साथ-साथ Councelling परामर्श की भी आवश्यकता है। ऐसे परिवारों के साथ प्रशिक्षित स्वयंसेवी के रहने से मानसिक रूप से वह उत्पीड़न/आपदा से बाहर आ सकता है। पुनः खोये हुए व्यक्तियों के पता लगाने में न सिर्फ शक्तिचालित नावों की मदद, रडार, हेलिकोप्टर और कृत्रिम उपग्रहों की भी सहायता ली जा सकती है। ऐसे कार्यों में नौसेना की सहभागिता निश्चित होनी चाहिए।

मलबा में दबे हुए लोग यदि जीवित हैं तो उसे तत्काल मलबे से बाहर निकालने की जरूरत है। प्रारंभ में कुत्तों के सूंघने के आधार पर जीवित होने की संभावना का पता चलता है। लेकिन वर्तमान समय में इंफ्रारेड कैमरों की मदद से ध्वनि श्रवण की उपकरणों की मदद से (बायो रडार) से मलबे के नीचे दबे हुए लोगों का पता लग जाता है। इस प्रकार के आकस्मिक प्रबंध के लिए यह अति आवश्यक है कि पंचायतों में पूर्व से ही इस प्रकार की यंत्रों की व्यवस्था हो।

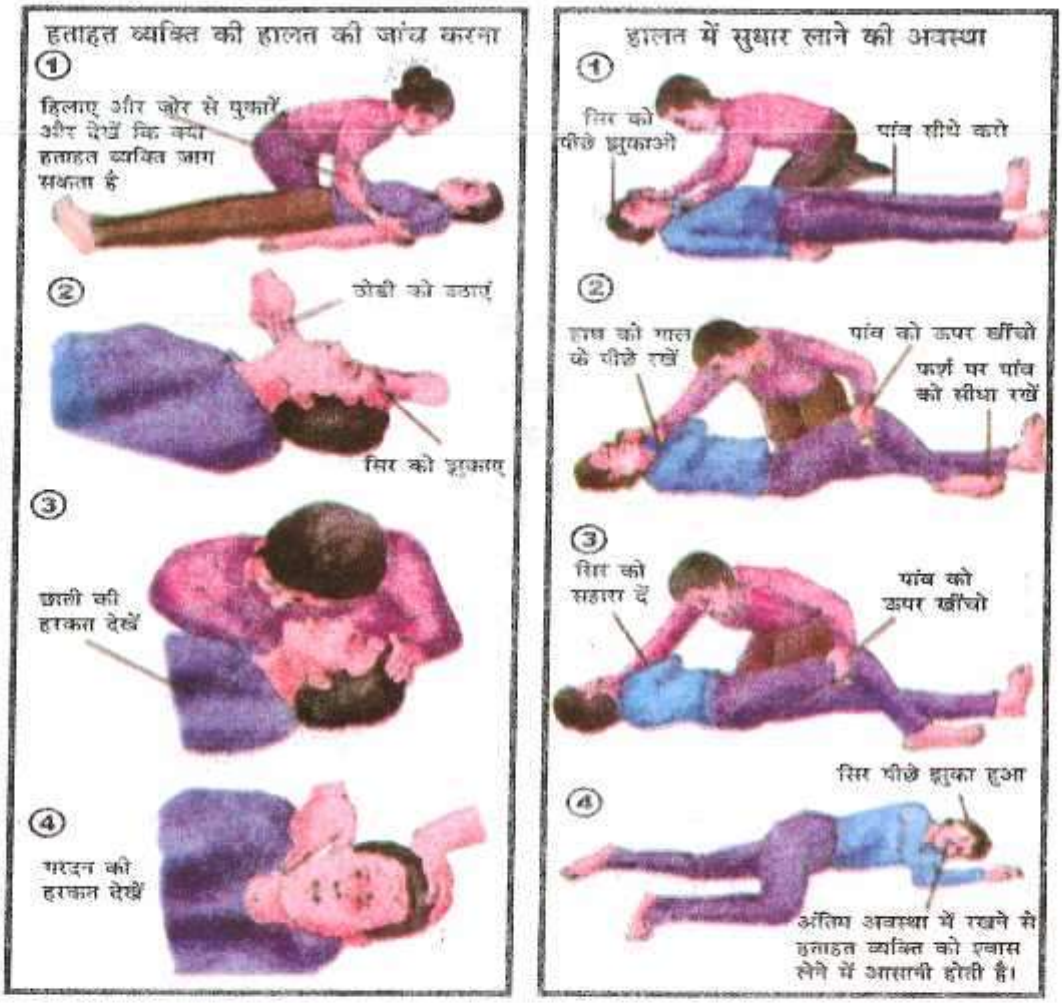

हताहत व्यक्ति की हालत की जांच करना/हालत में सुधार लाने की अवस्था

(3) आग लगने की स्थिति में : शुष्क गर्मी ऋतु में गाँव के गाँव का आग से स्वाहा हो जाना आपदा का ही एक रूप है। ऐसी आपदा में आकस्मिक प्रबन्धक की तीन बड़ी जिम्मेवारी होती है :

(क) आग में फँसे हुए लोगों को बाहर निकालना,

(ख) घायलों को तत्काल प्राथमिक उपचार देकर अस्पताल पहुँचाना। प्राथमिक उपचार में ठंडा पानी डालना, बर्फ से सहलाना और बरनोल जैसी प्राथमिक औषधि का उपयोग करना। इससे जलन में राहत होती है।

(ग) आग के फैलाव को रोकना, जिसके लिए नजदीक में उपलब्ध बालू, मिट्टी, अगर तालाब हो तो तालाब के जल का उपयोग, अग्निशामक दल को बुलाना तथा यदि झुग्गी झोपड़ी हो तो कुछ दूरी से इस प्रकार उखाड़ फेंकना कि अगले मकान तक आग का संकट न हो सके। यदि आग के कारण विद्युत शार्ट-सर्किट है तो सबसे पहले बिजली लाईन को विच्छेदित करना चाहिए। इसके बाद ऊपर वर्णित आकस्मिक प्रबंधन का अनुसरण करना चाहिए।

आग के समय यदि कोई व्यक्ति छत के ऊपर फँसा हो तो उसे बाहर से सीढ़ी लगाकर उतारने का कार्य या फिर हेलमेट या अग्निप्रतिरोधी (Fire resistant) जैकेट पहनकर उसे बाहर निकालने का कार्य करना।

राहतकर्मियों के लिए प्राथमिक उपकरण और उपचार : विविध प्रकार के आपदा की स्थिति में प्राथमिक प्रबंध का कार्य गाँव या समाज के ही लोग कर सकते हैं। अतः ग्राम-पंचायतों के लिए आवश्यक है कि वह प्रत्येक गाँव में आपदा प्रबन्धन समिति बनाये और स्वयंसेवी संस्थायें उसे आवश्यक प्रशिक्षण दें, राज्य सरकार के लिए आवश्यक है कि ऐसी समितियों को कुछ आवश्यक उपकरण और प्राथमिक उपचार के उपकरण उपलब्ध करायें। आवश्यक उपकरणों को दो वर्गों में रख सकते हैं (क) बचाव कर्मियों के लिए निजी उपकरण (ख) बचाव दल के लिए उपकरण।

बचाव कर्मियों के लिए निजी उपकरण
हेलमेट
लाइफ जैकेट
टॉर्च
गम-बूट
सीटी

बचाव दल के लिए उपकरण
सीढ़ी
रस्सी
घिरनी
प्राथमिक उपचार बॉक्स
हथौड़ा
स्ट्रेचर

प्राथमिक उपचार के सामान
साबुन
रूई
कीटनाशक दवा
थर्मामीटर
कैंची
दस्ताने
ओ० आर० एस० पैकेट
ऐन्टासिड
बैंडेज
कीटाणु रहित मरहम पट्टी
क्रेप बैंडेज
चिपकानेवाली टेप

आकस्मिक प्रबंधन के घटक :

आकस्मिक प्रबंधन के तीन प्रमुख घटक हैं:-

(1) स्थानीय प्रशासन

(2) स्वयंसेवी संगठन

(3) गाँव अथवा मुहल्ले के लोग

प्रबंधन की अग्रिम पंक्ति में गाँव और मुहल्ले के लोग हो सकते हैं। इसके लिए युवकों को मानसिक रूप से सुदृढ़ और तकनीकी रूप से प्रशिक्षित करने की जरूरत है। यह कार्य स्वयंसेवी संस्थायें कर सकती हैं। वस्तुत: स्वयंसेवी संस्थाओं के लिए आवश्यक है कि वे न सिर्फ युवकों को प्रेरित और प्रशिक्षित करें वरन लोगों को फिल्म या विडियो को दिखाकर बहादुरी के कारनामों को दिखायें जिससे कि आपदाओं से लड़ने की मानसिक दृढ़ता उत्पन्न होगी।

आपदा प्रबंधन को दिनचर्या का एक अंग समझना आवश्यक है। स्वयंसेवी संस्था, गाँव के युवकों तथा पंचायत प्रबंधन के बीच समन्वय आवश्यक है। तभी आकस्मिक प्रबंधन

सफल हो सकता है। ऐसे प्रबंधन में जाति, धर्म और लिंग का कोई महत्व नहीं है। मिलजुलकर आपदा से लड़ने का संदेश देना आवश्यक है। इस प्रकार का संदेश विद्यालय के बच्चों को भी देने की जरूरत है। ये कार्य भी स्वयंसेवी संस्थाऐं कर सकती हैं।

आकस्मिक प्रबंधन में स्थानीय प्रशासन की महत्वपूर्ण भूमिका है। इसके लिए आवश्यक है कि वे राहत शिविर का निर्माण करें। वहाँ सभी उपकरण और प्राथमिक उपचार की सामग्रियाँ उपलब्ध करायें तथा एमब्युलेंस (Ambulance) डॉक्टर, अग्निशामक इत्यादि की व्यवस्था में तत्परता दिखायें। कागजी दाव पेंच में न पड़कर राहत राशि और राहत सामग्री को पहुँचाकर आपदा प्रबंधन को सरल तथा सहज बना सकते हैं।

अभ्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न :

1. बाढ़ के समय निम्नलिखित में से किस स्थान पर जाना चाहिए ?

   (क) ऊँची भूमि वाले स्थान पर (ख) गाँव के बाहर

   (ग) जहाँ हैं उसी स्थान पर (घ) खेतों में

2. मलबे के नीचे दबे हुए लोगों को पता लगाने के लिए किस यंत्र की मदद ली जाती है ?

   (क) दूरबीन (ख) इंफ्रारेड कैमरा

   (ग) हेलीकॉप्टर (घ) टेलीस्कोप

3. आग से जलने की स्थिति में जले हुए स्थान पर क्या प्रथमिक उपचार करना चाहिए?

   (क) ठंडा पानी डालना (ख) गर्म पानी डालना

   (ग) अस्पताल पहुँचाना (घ) इनमें से कोई नहीं

4. बस्ती/मकान में आग लगने की स्थिति में क्या करना चाहिए ?

   (क) अग्निशामक यंत्र को बुलाना (ख) दरवाजे-खिड़कियाँ लगाना

   (ग) आग बुझने तक इंतजार करना (घ) इनमें से कोई नहीं

5. सुनामी किस स्थान पर आता है ?

   (क) स्थल (ख) समुद्र

   (ग) आसमान (घ) इनमें से कोई नहीं

लघुउत्तरीय प्रश्न :

1. जीवन रक्षक आकस्मिक प्रबंधन से आप क्या समझते हैं ?
2. बाढ़ की स्थिति में अपनाये जाने वाले आकस्मिक प्रबंधन का संक्षेप में वर्णन कीजिए।

3. भूकंप एवं सुनामी की स्थिति में आकस्मिक प्रबंधन की चर्चा संक्षेप में कीजिए।

4. आकस्मिक प्रबंधन में स्थानीय प्रशासन की भूमिका का वर्णन करें।

5. आग लगने की स्थिति में क्या प्रबंधन करना चाहिए ? उल्लेख करें।

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न :

1. जीवन रक्षक आकस्मिक प्रबंधन से आप क्या समझते हैं ?

2. आकस्मिक प्रबंधन में स्थानीय प्रशासन एवं स्वयंसेवी संस्थाओं की भूमिका का विस्तार से उल्लेख कीजिए।